Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 2, Mar-Apr – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 08/04/2020 Accepted on : 22/04/2020 Publication Date: 30/04/2020

समाज के स्वर – परिवार : एक विश्लेषण

DR. K. JAYALAKSHMI
Associate Professor, Department of Languages,
VIT, Vellore, Tamilnadu 632014
Email - kjayalakshmi@vit.ac.in

सारांश : आधुनिक हिन्दी साहित्य को नयी दिशा देने में और हिन्दी साहित्य के नाट्य परंपरा को नया अर्थ व आदर्श देने में डॉ . रामकुमार वर्मा का बड़ा हाथ है । पाश्चात्य तकनीकों से प्रभावित होकर ही इन्होंने हिंदी एकांकी साहित्य को एक नया मोड़ दिया है | इन्होंने कुल 125 एकांकी लिखे हैं | इनके एकाँकियों का संकलन समाज के स्वर शीर्षक के नाम से 3 भागों में प्रकाशित किया गया | समाज और सामाजिक समस्यायों से सम्बंधित है सामाजिक एकांकी | सामाजिक एकाँकियों का संकलन 'समाज के स्वर – परिवार' में उन्होंने मध्यवर्गीय परिवार में पति पत्नी को पात्र बनाकर उनके बीच जो समस्यायें उत्पन होती है उसका वर्णन किया है | मध्यवर्गीय परिवार के आंतरिक संघर्ष, आर्थिक समस्या, बेरोजगारी जैसी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है |

मूल शब्द :डॉ रामकुमार वर्मा, सामाजिक एकाँकी, मध्यवर्ग, संघर्ष |

१ भूमिका :

आधुनिक हिन्दी साहित्य ने कई नए आयामों को देख है | नाटक के क्षेत्र में हिन्दी लघु नाट्य परंपरा को नया आयाम दिया है, और इस नाट्य परंपरा को नया मोड़ देने में सबसे प्रमुख और प्रख्यात साहित्यकार हैं डॉ. रामकुमार वर्मा जिन्हें आधुनिक हिन्दी साहित्य के एकाँकी सम्राट माना जाता है | इन्होंने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और साहित्यिक एकांकियों की रचना की है | इनमें इनके ऐतिहासिक और सामाजिक एकांकी सर्वश्रेष्ठ हैं | ऐतिहासिक एकाँकी में भारतीय इतिहास से विषय वस्तु को लिया गया है और सामाजिक एकाँकी में प्रेम और सेक्स विषय वस्तु तो हैं पर वे व्यक्ति के मानसिक अंतर्द्वंद को आधार भूमि बनाकर यथार्थ के कलेवर पर समाज और जीवन की वस्तु स्थिति को प्रस्तुत करते हैं | डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में " जीवन के स्वाभाविक गतिप्रवाह को एक बल देना अथवा उसकी दिशा में झुकाव लोट देना ही मेरी नाटक – रचना का प्रमुख उद्देश्य रहा | अपनी इस कला का प्रयोग मैं सामाजिक नाटकों में विशेष विश्वास के साथ कर सका हूँ |[i] डॉ. रामकुमार वर्मा के सामाजिक एकांकियों का संकलन 'समाज के स्वर' –व्यक्ति,परिवार और वर्ग शीर्षकों से 3 भागों में प्रकाशित किया गया | इस प्रपत्र में परिवार पर आधारित एकांकियों का विश्लेषण किया गया है | इस संकलन के 'परीक्षा', '18 जुलाई की शाम', 'रेशमी टाई', 'शक्ति संजीवनी','हीरे के झुमके', 'शहनाई की शर्त', 'चक्कर का चक्कर', 'फैल्ट हैट' पर विश्लेषण किया गया है |

२ प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति में परिवार का बड़ा स्थान है क्योंकि परिवार समाज की एक इकाई है। परिवारों से मिलकर ही समाज का निर्माण होता है । समाज में परिवर्तन की प्रवृत्ति व्यक्तिगत एवं परिवारगत आधार पर है | समाज की सबसे छोटी इकाई व्यतिगत परिवेश में है | ये व्यक्तिगत परिवेश दो व्यक्तियों से संयोजित है, पुरुष और नारी का | अपने सामाजिक एकांकियों के माध्यम से रामकुमार वर्मा इसी व्यक्तिगत परिवेश पर नज़र डालते हैं | 'समाज के स्वर – परिवार' में रामकुमार वर्मा मध्यवर्गीय परिवार के जीवन परिवेश पर प्रकाश डालते हैं | इस संकलन में उन्होंने उच्च और निम्न मध्यवर्गीय परिवार का वर्णन तो किया है परंतु जैसे इसका शीर्षक का नाम 'समाज का स्वर – परिवार' है इसमें पारिवारिक संबंधों के गहरे रिश्तों पर या बनते – बिगड़ते रिश्तों पर प्रकाश नहीं डाला है | इस एकाँकी संकलन में एक मध्यवर्गीय परिवार के आंतरिक संघर्ष, आर्थिक समस्या, बेरोज़गारी जैसी समस्याओं पर प्रकाश डाला है |

आधुनिक जीवन में संघर्ष अपना बीज जमाया हुआ है | यह संघर्ष प्रायः दो प्रकार के होते है – बाह्य और आंतरिक | वर्मा जी ने मुख्यत: आंतरिक संघर्ष का ही सफल चित्रण किया है | इसका उत्तम उदाहरण 'परीक्षा' एकाँकी है जो स्त्री मनोविज्ञान से संबन्धित है जिसके केंद्र पात्र में एक ऐसी स्त्री है जो 20 वर्ष की ग्रेजुएट होते हुए भी 50 वर्ष के प्रोफेसर केदारनाथ से विवाह करती है | प्रो. केदारनाथ के मन में उपजे संदेह में इसी आंतरिक संघर्ष का चित्रण हुआ है | वे हमेशा सोचते रहते हैं की यौवन अवस्था की इस पत्नी में अपने प्रौढ़ पति के प्रति क्या विचार या फीलिङ्ग्स है | "ये ग्रेजुएट लड़कियां क्या चाहती हैं ? स्वतंत्रता – आर्थिक स्वतंत्रता – इकनामिक फ्रिडम – पति सिर्फ उनका साथी है और पति का कर्तव्य क्या है ?....[ii] प्रोफेसर के मानसिक अंतर्द्वंद का स्पष्ट उल्लेख इस वाक्य में मिल जाता है | वहीँ एकांकीकार कुछ आदर्शों की स्थापना भी करते हैं | डॉ. वर्मा नारी को मध्यकालीन आदर्शों की जंजीरों में बाँधने के पक्षपाती हैं | इस एकांकी की अल्पवयस्का पत्नी रत्ना जो शिक्षित है , अपने प्रोढ़ पति के प्रति असीम प्रेम रखती है जब रस पीकर वे बूढ़े बन जाते हैं तो रत्ना भी कहती है "मुझे भी बूढी होनी चाहिए |..... डाक्टर, यह उम्र मुझे नहीं चाहिए |"[iii] प्रेम में उम्र कोई मायने नहीं रखता इसका उत्तम उदहारण है यह वाक्य और साथ ही ऊँचे धरातल द्वारा स्त्री की मन:स्थिति का सच्चा चित्र यहाँ अंकित है |

भारतीय समाज में मध्यवर्गीय व्यक्ति की आर्थिक स्थिति बड़ी दयनीय है | बाहर ही नहीं अपने परिवार के बीच भी उसे अपेक्षित किया जाता है | '18 जुलाई की शाम' इसी विषय पर आधारित एकांकी है | अमीर परिवार में पली उषा का विवाह एक मध्यवर्ग परिवार में होता है जहाँ का वातावरण बिल्कुल अलग होने की वजह से वह अपने नए परिवार में समायोजित नहीं कर पाती | नए ख़यालात रखनेवाली उषा धन, दौलत, के अलावा नयी फैशन और एशो – आराम की ज़िन्दगी को जीवन का सच्चा सुख समझती है | जब विवाह के बाद उसे ये भौतिक सुख अपने पति प्रमोद जो 'राष्ट्रवाणी' में संवाददाता है और जिसका वेतन मात्र रूपये 40 है, से नहीं मिलता तो वह अपने पति को बेकार और व्यर्थ समझती है | उषा कभी उसको समझ नहीं सकती और न ही समझना चाहती है | वह प्रमोद से घृणा करती है और वह अपने दोस्त अशोक जो की उसका सहपाठी है उसके साथ देहरादून जाना चाहती है क्यूंकि वह अमीर है | 18 जुलाई के शाम जब उषा निकलने वाली थी तब उसकी मुलाकात राजेश्वरी से होती है जो उसको समझाते हुए कहती है कि "धन और रुतबे से कोई आदमी बड़ा नहीं होता | वह बड़ा होता है अपने हृदय से |"[iv] एकांकी के अंत में हम देखते हैं कि उषा का हृदय परिवर्तन होता है और उषा प्रमोद के साथ रहने लगती है | इस एकांकी में वर्मा जी इस तथ्य पर ज़ोर देते हैं कि धन सब कुछ नहीं होता, अच्छा मन सबसे बड़ा होता है |

परिवार में अगर पुरुष स्त्री की कोमल प्रकृति धारण करें और स्त्री पुरुष का प्रतिरूप बन जाए तो क्या होगा ?इसी पर आधारित एकांकी है 'शक्ति संजीवनी' जिसकी नायिका आशा अपने पति महेश को पैसे कमाने वाला मशीन से लेकर घर के काम में दक्ष बना देना चाहती है | अपने सुख – सुविधा और अपने साज –श्रींगार पर आत्म – केन्द्रित आशा अपने पति के शरीर में नव जीवन का संचार करने केलिए 'शक्ति संजीवनी' के तलाश में है और जब उसे यह संजीवनी मिलती है तो किस प्रकार उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर जाता है इसका उल्लेख इस एकांकी में प्रस्तुत किया है | डॉ. वर्मा पाठक के समक्ष यह तथ्य रखते हैं कि भारतीय समाज में अक्सर पुरुषों के हाथ स्त्रीयों का शोषण होते सुना है पर नारी के इशारे पर चलनेवाले पुरुष का किस्सा बहुत कम ही मिलता है | इस एकांकी में ऐसे पुरुष की विवशता और इससे उसकी मुक्ति का विवरण है | इस एकाङ्की में पत्नी के रूप में स्त्री का क्या स्थान होना चाहिए, इस पर विचार करते हैं और साथ ही उन्होंने यह बताने का प्रयास किया है कि कैसे पुरुष अपने कर्मक्षेत्र में मध्याह्न का सूर्य है और स्त्री शारदीय निशा में चन्द्रकला की भांति सुसज्जित है | एकांकीकार के राय में पति पत्नी एक दूसरे को दबाने की और एक दूसरे को अपने अंकुश में दबाये रखने की कोशिश करते हैं तो वहां शक्ति संजीवनी का प्रयोग अवश्य होना चाहिए |

स्त्री स्वाभाव का पूरा चित्रण उनकी एकांकी 'हीरे के झुमके' में मिलता है | स्त्री हमेशा आभूषण के प्रति आकर्षित रहती है | इस एकांकी के सभी पात्र एक वर्ग विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं | आभूषण से लगाव होने के कारन हमेशा नारी – नारी के बीच ईर्ष्या और प्रतिद्वान्द्वित्व होती है | चंद्रा ऐसी मनोवृति रखनेवाली स्त्री है जिसमें स्त्री सुलभ स्वभाव का पूरा विवरण मिल जाता है | "तुम स्त्रीयों के श्रृंगार और ईर्ष्या की बात क्या जानो ? हम एक स्त्री दूसरी स्त्री को अपने से नीचा दिखाने की कोशिश कर रही थी | एक – एक बात में इतनी बारीकी थी कि कोई परखने वाला होता तो परखता |"[v] नारी की इसी शान शौकत को विषय बनकर उस पर व्यंग्य करते हैं डॉ. वर्मा | एकांकीकार का विचार है कि इस ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा के समाने पुरुष मात्र एक विदूषक बन जाता है |

बेकारी की समस्या हमारे देश में सालों से चली आ रही है, और एक आदर्श व्यक्ति सुशिक्षित होने पर और लाख कोशिश के बाद भी बेरोज़गार हो तो उस पर इसका क्या असर पड़ता इसीपर आधारित है एकांकी 'शहनाई की शर्त' | एकांकीकार ने इसमें करुणा की कहानी को प्रस्तुत किया है | स्त्री को अपने कार्य क्षेत्र में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है | इस पुरुष प्रधान समाज में उसे आगे बढ़ने केलिए कई प्रकार के समस्याओं का सामना करना पड़ता है | शहनाई की शर्त की करुणा उन सुशिक्षित स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो नौकरी करके अपना तथा अपना परिवार का गुज़ारा करने को बाध्य है | इसमें वर्मा जी करुणा के माध्यम से स्त्रियों की नौकरी के मार्ग में आनेवाले खतरों पर प्रकाश डालते हैं :"स्त्रियों केलिए नौकरी अभिशाप है ..... जिस स्कूल या कॉलेज में मुझे काम मिला उसके अधिकारी और मैनेजर मुझे ऐसी दृष्टि से देखते थे कि सम्मान के साथ वहां नहीं रह सकती थी|"[vi] करुणा अपनी नौकरी छोड़ देती है और जब तीन दिन से बीमार माँ के साथ भूख सेहन नहीं कर पाती तो वह चोरी करने निकल जाती है | जिस घर में करुणा चोरी करती है अंत में उसी आदमी से उसकी शादी होती है | डॉ. वर्मा यह कहते हैं कि दुनिया में सही मार्ग पर चलने वाले लोग जब भूखे मरते हैं और गलत राह पर चलने वाला जब आराम की ज़िन्दगी जीते हैं तो बेकार मनुष्य आखिर हारकर कुमार्ग पर चलने केलिए विवश हो जाता है तो किसको दोषी ठहराए | एकांकीकार ने बेकारी और उससे उत्पान भूख और चोरी की जो समस्या प्रस्तुत किया है उसका समाधान इस एकांकी में पेश किया है |

हमारे समाज में भूत – प्रेत, राशि – भविष्य, धार्मिक अनुष्ठानों पर विश्वास किया जाता है | साथ ही भूत – प्रेत की बाधाओं से मुक्त होने केलिए मंत्र – तंत्र आदि पर विश्वास रखनेवाले लोगों की कमी नहीं है | तो दूसरे तरफ ऐसे बातों पर बिल्कुल विश्वास न रखने वाले भी | 'चक्कर का चक्कर' ऐसी ही एकांकी है जिसमें भूत – प्रेतादि के सम्बन्ध में रहनेवाले अंधविश्वास और अविश्वास का संघर्ष है | इस एकांकी के पात्रों द्वारा यह समझाना चाहते हैं कि वास्तव में कोई भूत – प्रेत नहीं है | श्याममोहन के माध्यम से वर्माजी यह व्यक्त करना चाहते हैं कि उसको एक प्रकार का वेहम है | उसके चक्कर, ग़ज़ल पेश करना और ज़्यादा पानी पीना इस वजह है क्योंकि बचपन में उसने अपने मामाजी के बारे में बहुत सुना था और यह विश्वास कर लिया की मामाजी का भूत बरसों से हवेली में घूम रही है जिसे वर्मा जी अवचेतन मन की धारण मानते हैं | अत: जब भी मामाजी की याद आती है श्याममोहन को चक्कर आता है | बचपन में सुसंस्कृत परिवार में पले वर्मा जी मंत्र –तंत्र पर विश्वास रखने वाले थे और यह जानते हैं कि मंत्र – तंत्र की शक्ति से भूत गायब होता है | भौरो नौकर के माध्यम से समस्या का परिहार भी करते हैं | इस एकांकी से एकांकीकार ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता का चित्र अंकित किया है | नए – पुराने आचार – विचारों के बीच पैदा होनेवाले संघर्षों का विश्लेषण और उसका समाधान प्रस्तुत किया है |

जब दो सभ्यतायें परस्पर मिलती है तो कभी – कभी उनका प्रतिफलन हास्यास्पद परिस्थिति में खडा कर देती है | यह ज़्यादातर वेशभूषा के सन्दर्भ में हो तो कभी – कभी यह परिवार में गृह कलह का कारण भी बन जाता है | "फैल्ट – हैट' के आनंद मोहन पाश्चात्य सभ्यता और उनकी वेश – भूषा पर ज़ोर देने वाला व्यक्ति है –" मैं चाहे अपना सर कहीं भूल आऊं, लेकिन इतना अच्छा हैट नहीं भूल सकता|"[vii] आनंद मोहन पाश्चात्य सभ्यता की झूठी शान में जीना वाला है | खद्दर, गाँधी टोपी को अपने स्टाइल के खिलाफ मानता है – "लेकिन जब किसी फैशन के कपडे पहनो तो अच्छी तरह पहनना चाहिए |..... अगर इस सूट के साथ फैल्ट हैट न रहे तो कैसे लगे?"[viii]

जब एक नया व्यक्ति परिवार में आता है तो स्वाभाविक रूप से वहां एक हलचल मच जाती है | जब परिवार में नयी बहु आये तो सास और बहु में तु – तु –मैं –मैं शुरू हो जाती है जहाँ दो परम्परओं का संघर्ष छिपा है | यह संघर्ष 'कहाँ से कहाँ' एकांकी का केंद्र बिन्दु है | सास के हृदय में बहु के प्रति द्वेष और पुत्र से उसके खिलाफ झूठी शिकायत करना, उसपर बेवजह क्रुद्ध होना | क्योंकि सास भी अभी बहु थी यह तथ्य इधर सही बैठता है | इसी मनोवृति को लेकर सास अपने बहु से पेश आती है | जब पुत्र बहु पर बड़क पड़ता है तो उसे मज़ा आता है | लेकिन जब पुत्र बहु को मारने लगता है तो माँ की ममता जाग उठती है और कहती है "मैं सच कहती हूँ, सारा कसूर मेरा था | मैंने झूठी शिकायते की थी | तुझे मेरी कसम, दरवाज़ा खोल"[ix] एकांकी के अंत में आकर सास के मन में जो हृदय परिवर्तन होता है उसे वर्मा जी ने पेश किया है | स्त्री जनित स्वभाव का वर्णन अंत में एकांकीकार करते हैं जिसमें स्त्री जनित, दया, ममता और क्षमा दिखाई पड़ता है |

उच्च मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति भी बेहतर नहीं होता | मध्यवर्गीय परिवार का जो आर्थिक संकट, महँगाई तथा अपर्याप्त वेतन के कारण अनेक कठिनाईओं का सामना करते हुए किस प्रकार ज़िन्दगी से लड़ते हैं इसका उत्तम उदहारण 'रेशमी टाई' | मानव मन में फैले कुसंस्कार पर चित्रित एकांकी है | सब जानते हैं की चोरी करना दुर्गुण है | लेखक का मत है

कि "यदि सात्विक गुणों से चोरी हो तो अभिनंदनीय है | श्रीकृष्णा की माखन चोरी और नारी हृदय की चोरी पवित्रता और निरीहता की ओर संकेत करती है किन्तु रेश्मी टाई की चोरी हृदय पर रहते हुए भी संस्कारों के प्रति बड़ा प्रश्न चिह्न है |[x] नवीन एक ऐसा पात्र है जो आर्थिक संकट से जूझता है | अगर उसे कुछ पसंद आये तो बचपन से ही वह उस वस्तु की चोरी करता था | शादी के बाद भी उसकी यह स्वाभाव छुटी नहीं | आर्थिक आभाव के कारण वह कभी कुछ मन पसंद वस्तु खरीद नहीं पाता लेकिन उसकी झूठी शान उसकी मज़बूरी को प्रकट होने नहीं देती | वह चीज़ों को चुपके से उठा लेता था जिसका उल्लेख पति पत्नी के वार्तालाप में पत्नी के इन शब्दों में स्पष्ट है :"यह बात आपके स्वभाव से नहीं गयी | जब आप पढ़ते थे, तब भी किताबों के खरीदने में आप ऐसे ही हाथ की साफी दिखलाते थे |"[xi]

इन एकांकियों में जो संवाद आते हैं वे सहज हैं और भाषा शैली अत्यंत स्पष्ट | साधारण भाषा शैली का प्रयोग हुआ है | शिक्षित पात्र अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग यत्र – तत्र करते हैं | इसका हिंदी अनुवाद पाद – टिप्पणी में दिया गया है | नौकर जैसे पात्र गंवारु भाषा – शैली का प्रयोग करते हैं | जैसे भरैव का कथन "श्याम बाबू के मामाजी बड़े चालक हते | मनो हम से पार ने पा सके | अपनी सी भौत करी उनने, मनो हमने सोई अपनी कला दिखाई | नरसिंह कवच पठके मैंने मामाजी को भूत पकल्लओ, बाहै कैद कल्लओ |[xii]

३ निष्कर्ष :

डॉ. रामकुमार वर्मा अपने सामाजिक एकांकियों के द्वारा किसी न किसी आदर्श को स्थापित करते हैं | आधुनिक समाज की संकीर्ण, रुढ़िवादी मान्यताओं पर प्रहार करते हुए उदार और स्वस्थ सामाजिक चेतना का विकास करते हैं | सारे नारी पात्र शिक्षित हैं लेकिन कुछ पात्र नारी – स्वाभाव के सहज चित्र अंकित करते हैं | अंत में वर्मा जी इन पात्रों में आने वाली हृदय परिवर्तन भी हमें दिखाते हैं | मोहन, श्याममोहन, प्रमोद,राजन जैसे पात्र कर्तव्यपरायण और शांत व्यक्तित्व रखने वाले हैं साथ ही किस प्रकार ये पात्र आर्थिक कठिनाइयों का सामना करते हुए किस प्रकार ज़िन्दगी से लड़ते हैं उसे भी प्रस्तुत करते हैं | अगर हम इन एकांकियों का विश्लेषण करें तो हम देख सकते हैं कि इन एकांकियों में वर्मा जी ने मध्यवर्गीय जीवन के व्यक्तिगत समस्याओं और तनावओं को प्रस्तुत किया है जो आर्थिक अभाव के कारण जनम लेती है | साथ ही इसमें इसका समाधान भी प्रस्तुत है जिसमें एक हद तक वे सफल भी हुए हैं | साथ ही भारतीय संस्कृति के दायरे में खड़े होकर स्त्री धर्म का पूरा परिचय भी हुआ है |

सन्दर्भ:

[i] डॉ. रामकुमार वर्मा , एकाँकी कला .

[ii] परीक्षा पृ.150

[iii] परीक्षा पृ.164

[iv] 18 जुलाई की शाम पृ.

[v] हीरे के झुमके पृ.47

[vi] शहनाई की शर्त पृ.74-75

[vii] फैल्ट – हैट पृ.127

[viii] फैल्ट – हैट पृ.129

[ix] कहाँ से कहाँ पृ. 313

[x] समाज का स्वर भाग 2, संकेत पृ.195

[xi] रेश्मी टाई पृ.200

[xii] चक्कर का चक्कर पृ.114